यहां सरकार राजा राम की है

राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री या अन्य कोई अतिविशिष्ट हो, यहां कोई प्रोटोकॉल नहीं चलता। इस चौखट पर पहुंचकर सभी अपने राजा की प्रजा के रूप में होते हैं, क्योंकि यहां तो सरकार आज भी राम राजा की है।

झांसी से जुड़ा मध्य प्रदेश का जिला नेवाड़ी की ओरछा नगरी कभी बुंदेली शासकों की राजधानी थी। इतिहास में खास चर्चा पाने वाले ओरछा में अब भले ही राजशाही नहीं है, लेकिन यहां के रामराजा मंदिर में आज भी भगवान राम को राजा का दर्जा प्राप्त है। उनकी सेवा, पूजा पूरे राजसी तरीके से होती। भक्तों का मानना है कि भगवान राम अयोध्या के राजा भले ही हैं, लेकिन उनका दिन में प्रवास यहीं होता है। इस पर ये पंक्तियां बहुत प्रचलित हैं, राजाराम के दो हैं वास, दिवस ओरछा बसत हैं, रात अयोध्या वास।

दर्शन स्थल और पर्यटन के विकल्प

- ओरछा में दर्शन के साथ पर्यटन का आनंद लेना चाहें तो चतुर्भुज मंदिर जरूर जाइए। ओरछा राजशाही द्वारा निर्मित मन्दिरों की खूबसूरती ऐसी है कि यहां विदेशी सैलानियों का जमावड़ा पूरे साल लगा रहता है। इसके अतिरिक्त राम राजा सरकार के मंदिर के ठीक बगल में बुंदेलखंड के कुल देवता माने जाने वाले हरदौल की बैठक है, जहां बुंदेलखंड वासी मन्नत मांगने और बच्चों के मुंडन आदि संस्कार करने आते हैं।

...चार बार गार्ड ऑफ ऑनर

- यहां तैनात स्पेशल आर्म्स फोर्स के जवान कमर में बेल्ट नहीं बांधते। गेट के बाहर जूते निकालकर अंदर प्रवेश करते हैं। ये जवान राज्यपाल या मुख्यमंत्री या अन्य संवैधानिक पदों पर बैठे लोग जब दर्शन के लिए आते हैं तो उन्हें सलामी नहीं देते, क्योंकि जहां राजा राम सरकार हों भला वहां किसकी क्या विसात। हां, ये जवान दिन में चार बार राजा राम को गार्ड ऑफ ऑनर जरूर देते हैं।
- आजादी के पहले यहां तलवार, तोप और फिर बंदूक से राजा राम को गार्ड ऑफ ऑनर देने की परंपरा थी। 1947 में जब राजशाही समाप्त हुई तो अंतिम शासक वीर सिंह जूदेव ने भी शर्त रखी कि हमारी रियासत की परंपरा जारी रहेगी और आज भी ये कायम है।

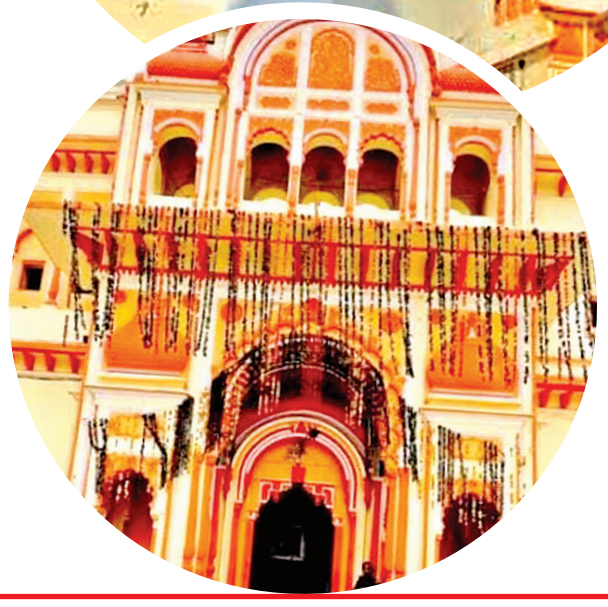

लेकिन मंदिर तो सूना है

ओरछा में जहां राजा राम विराजे हैं, वास्तव में वो मंदिर नहीं, बल्कि रानी का शीशमहल है। उसी के बगल में राजा मधुकर शाह द्वारा भगवान राम के लिए बनवाया गया भव्य और सुंदर नक्काशी का मंदिर खाली पड़ा है। कहते हैं कि जब रानी अयोध्या से भगवान राम की मूर्ति लेकर चलीं तो रास्ते में रात को प्रभु राम ने सपने में कहा कि हमें एक स्थान में स्थापित करना। लेकिन भक्ति में रमी रानी ओरछा पहुंचकर ये भूल गईं और मूर्ति को शीश महल में रखकर मंदिर में विराजने की राजा के साथ तैयारी में जुट गईं। फिर प्रभु राम का निवास रानी का शीशमहल बन गया और मंदिर सूना ही रह गया। कभी ओरछा जाइए तो इसे भी देखिए।

दिलचस्प है मंदिर निर्माण की कहानी

दुनियाभर में विख्यात ओरछा के राम राजा मंदिर की कहानी बड़ी दिलचस्प है। 16 वीं सदी में यहां के राजा मधुकर शाह थे। वे भगवान कृष्ण के उपासक थे। रानी गणेश कुंवर भगवान राम की अन्नय भक्त थीं। दोनों को अपने आराध्य पर अगाध आस्था थी। एक बार राजा ने रानी से मथुरा चलने को कहा। रानी ने पलटकर जवाब दिया कि पहले अयोध्या चलेंगे। इस पर मधुकर शाह ने कहा कि इतना ही राम से प्रेम है तो अयोध्या से ले आओ अपने राम को। हम उनके लिए भव्य मंदिर बनवाते हैं। रानी ने इसे चुनौती मानकर अयोध्या का रुख किया और वहां कई वर्षों तक भगवान राम का पूजन अर्चन किया। एक दिन सरयू में स्नान करते समय प्रभु राम की यह मूर्ति उन्हें मिली जिसे ओरछा में स्थापित किया गया।

लेखिका : ऋचा बाजपेई

बोध कथा

कबिरा आप ठगाइये

मनुष्य के जीवन का एकमेव उद्देश्य है भगवान की प्राप्ति। उसके लिए शास्त्रीय विधि से उद्यम करते रहना श्रेयस्कर है। जो प्रयत्नशील नहीं है उसकी जीवन-यात्रा व शरीर का संरक्षण होना भी बहुत जटिल है। मनुष्य को चाहिए कि निकद्यमी को उद्यम में, अधर्मी को धर्म में, अशिक्षित को विद्या में, भूले को सन्मार्ग में, मूर्ख को ज्ञान में संलग्न करने और बद्ध को मुक्त करने में सहयोग करते रहना चाहिए। भूखे-प्यासे को अन्न-जल, दुःखी को आराम, निराधार को आधार, अनाश्रित को आश्रम, भयभीत को शान्ति और दुःखी को सुख देने में सहयोग करना ही मानव का कर्तव्य है। परिवार में वरिष्ठजनों, गुरुजनों व आश्रित की सेवा का ध्यान रखकर उनका पालन करना ही परम-धर्म है। भूख से कम खाना, अपकारी का अपमान न करके गम रखना, आय से अधिक व्यय न करना एवं घर-परिवार की जिम्मेदारी न होकर रहना बहुत हितकर है। नेत्रों से देख-देखकर भूमि पर चलना, सत्य-अहिंसा से शुद्ध वचन बोलना, छान करके जल को पीना, सोच-समझकर गुरु बनाना तथा विचार करके काम करते रहना चाहिए।

धन, जन और मन अपने नियन्त्रण में होने से काम में सहायता मिलती है। धन व जवानी में अहंकारी होकर अपनी वार्षिक आय को किसी दिन अचानक व्यय कर देने से अपना जीवन संकटमय बना लेना कोई बुद्धिमानी नहीं है। व्यसन, मांसाहारी, जुआरी, झगड़ालू, निर्लज्जता, पापी, कृतघ्नी, विष देना, जाति-देश निर्वासित, भले लोगों को सताना, दिवाला निकालना, दगाबाजी, चोर, दुष्ट, अपयशभाजन तथा नास्तिक, ज्ञान-भक्ति- मानवतारहित मनुष्य का कभी विश्वास नहीं करना चाहिए। समय और राजनीति के विरुद्ध लेन-देन व्यापार आदि भी नहीं करना चाहिए। पाखण्डी, मूर्ख, स्वार्थी, व्यसनी, आलसी और अपरिचित का विश्वास कभी नहीं करना चाहिए। 'कबिरा आप ठगाइये, और न ठगिये कोय' के आधार पर जीवन की नीति उचित रहती है। मनुष्य यदि स्वयं ठगा गया तो भय नहीं, लेकिन यदि दूसरों को ठगेगा तो फिर समाज का वातावरण प्रभावित होगा, प्रभु भी क्षमा नहीं करेगा। कटु वचन सहने वाला, लोभ की सीमा से बचे रहने वाला, क्रोधाग्नि से न जलने वाला, परनारी में मन न लगाने वाला, याचक को कभी न नहीं कहने वाला, और अपकारी के प्रति उपकार करने वाला मानव नहीं अपितु साक्षात देवता है। आप अपनी अभिलाषाओं को त्यागकर प्रभु की शरण में जाएं। प्रभु कृपा प्राप्त करने के लिए अत्यन्त दीन बनें। इच्छाओं का दमन करें, जिधर आपको इच्छाएं ले जाएं, उस ओर मत जाइए। दुःख को भी सहना सीखिए और विश्व के एकमात्र आधार प्रभु की इच्छा पर अपने को सभी तरह से पूर्ण रुपेण छोड़ना ही उचित है। यही सुखी बनने का आधार सदाचार है। विचार ही आचार के जनक होते हैं। यदि विचार अच्छे हुए तो आधार शुभ होगा ही। विचार मन में उत्पन्न होते हैं, मन अत्यन्त चंचल होता है और उसी की प्रेरणा से इन्द्रियां सारा कार्य सम्पादित करती हैं, अतः मन में शुभ विचार उत्पन्न हों, इसके लिए चाहिए कि मन को अशुभ विचारों की ओर जाने से विषयोन्मुख होने से रोका जाय। तभी इन्द्रियां भी शुभ कार्यों की ओर उन्मुख होंगी।

लेखक: डॉ. विजयप्रकाश त्रिपाठी।

शिव का वाहन नहीं अंश है वृषभ

एक बार भगवान शिव अत्यंत मनोहारी स्वरुप धारण करके भ्रमण कर रहे थे। दिगंबर वेश, शरीर पर भस्म और सुंदर जटाएं ऐसी कीर्ति बिखेर रही थीं कि करोड़ों कामदेव लज्जित हो जाएं। एक स्थान पर ऋषि यज्ञ कर रहे थे और शिव जी वहां से अपनी मस्ती में रामनाम अमृत का पान करते हुए निकल रहे थे। उनके अद्भुत रूप पर मोहित होकर ऋषि पत्नियां उनके पीछे-पीछे चली दीं। ऋषियों को समझ नहीं आया कि यह हमारे धर्म का लोप करने वाला अवधूत कौन है जिसके पीछे हमारी पत्नियां चली गईं। पत्नियां ही नहीं रहेंगी तो हमारे यज्ञ कैसे पूर्ण होंगे?

ऋषियों ने ध्यान लगाया तो पता लगा यह तो साक्षात भगवान शिव हैं। ऋषियों को क्रोध आ गया, उन्होंने श्राप दे दिया। श्राप से भगवान शिव के शरीर में दाह (जलन) उत्पन्न हो गई। इस पर वह वहां से अंतर्धान होकर हिमालय की बर्फ में गए, क्षीरसागर पहुंचे, चन्द्रमा एवं गंगा जी के पास भी गए परंतु दाह शांत नहीं हुई। हारकर वह अपने आराध्य श्रीकृष्ण के पास गए,उन्होंने गौ माता की शरण में जाने को कहा। अतः भगवान शिव गोलोक में श्री सुरभि गाय का स्तवन करने लगे। उन्होंने कहा कि सृष्टि, स्थिति और विनाश करनेवाली हे मां तुम्हें बार-बार नमस्कार है। तुम विश्व की दुःखहारिणी हो, मेरे प्रति प्रसन्न हो अमृतसम्भवे! ब्राह्मणों के शापानल से मेरा शरीर दहक रहा है, उसे शीतल करो।

● गोलोक में सुरभि गाय के पेट से 'नील वृषभ' के रूप में अवतीर्ण हुए शिव

गौ माता ने कहा- मेरे भीतर प्रवेश करो तुम्हे कोई ताप नहीं तपा पायेगा। भगवान शिव ने सुरभि माता की प्रदक्षिणा की और जैसे ही गाय ने 'ॐ मा ' उच्चारण किया शिव जी गौ माता के पेट में चले गए। शिव जी को परम आनंद प्राप्त हुआ। इधर शिवजी के न होनेसे जगत में हाहाकार मच गया। सारी सृष्टि शव के सामान प्रतीत होने लगी। शिव जी के न होने से रूद्र अभिषेक एवं यज्ञ कैसे हो? तब देवताओं ने स्तवन करके ब्राह्मणों को प्रसन्न किया और उनसे पता लगाकर उस गोलोक में पहुंचे, जहां के सिद्ध और सनातन देवता हाथों में दही और पीयूष लिए रहते हैं। देवताओं ने गोलोक में सुरभि गाय के पेट में सूर्य के समान तेजस्वी 'नील वृषभ' को देखा। देवताओं एवं ब्राह्मणों की स्तुति पर भगवान शिव वृषभ के रूप में अवतीर्ण हुए थे। देवता और मुनियों ने देखा गोलोक की गायों के बीच में नील वृषभ स्वच्छन्द क्रीड़ा कर रहा है। उसके सारे अङ्ग लाल वर्ण के थे। मुख पीला तथा खुर और सींग सफेद थे। बाएं पुट्ठे पर त्रिशूल और दाहिने पुट्ठे पर सुदर्शन का चिह्न था। वही चतुष्पाद धर्म थे और वही पञ्चमुख हर थे। देवता और ऋषियों ने विविध प्रकार से नील की स्तुति करते हुए कहा कि देव! तुम वृषरूपी भगवान हो, जो मनुष्य तुम्हारे साथ पाप का व्यवहार करता है, वह निश्चय ही वृषभ (बैल) होता है और उसे रौरवादि नरकों की यन्त्रणा भोगनी पड़ती है। जो तुम्हें पैरों से छूता है, वह गाढ़े बंधनों में बंधकर, भूख-प्यास से पीड़ित होकर नरक भोगता है और जो निर्दय होकर तुम्हें पीड़ा पहुंचाता है, वह शाश्वती गति-मुक्ति को नहीं पा सकता।

लेखक: आचार्य पवन तिवारी
संस्थापक अध्यक्ष-ज्योतिष सेवा संस्थान।

इस सप्ताह के व्रत और पर्व

अजा एकादशी पर श्रीहरि का पूजन

- भाद्रपद माह की कृष्ण पक्ष की एकादशी को अजा एकादशी कहा जाता है। एकादशी तिथि की शुरुआत 18 अगस्त की शाम 5 :22 बजे से होगी जो 19 अगस्त दोपहर 3 : 32 बजे तक रहेगी। हालांकि व्रत का पारण 20 अगस्त को सुबह 8 :29 बजे तक होगा। एकादशी पर भगवान विष्णु के पूजन का विधान है। एकादशी का व्रत का पारण द्वादशी के दिन होता है। साल भर में आने वाली 24 एकादशी में से भाद्रपद माह की कृष्ण पक्ष की एकादशी को अजा एकादशी के नाम से जाना जाता हैं। इस एकादशी के व्रत से पापों का नाश होता हैं और मोक्ष की प्रप्ति होती हैं। इस दिन अन्न का दान जरूर करना चाहिये, जिससे रोग और पीड़ा से मुक्ति मिलती हैं। अजा एकदशी के व्रत से मनुष्य को अश्वमेध यज्ञ के समान पुण्य की प्रप्ति होती हैं।

अखंड सौभाग्य की प्राप्ति का पर्व हरतालिका

- भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि 25 को अगस्त दोपहर 12 :35 बजे से शुरू होकर अगले दिन दोपहर 01 :55 बजे तक रहेगी। उदिया तिथि के आधार पर 26 अगस्त को हरितालिका तीज का यह पर्व मनाया जायेगा। इस दिन भगवान शंकर का पूजन कर मां पार्वती को सुहाग अर्पित कर विवाहित महिलायें निर्जला व्रत रखेंगी और अखंड सौभाग्य की कामना करेंगी। इस बार यह व्रत हस्त नक्षत्र और कन्या राशि में चंद्र मंगला योग में रहेगा जो धन वृद्धि प्रदायक होगा। कई शहरों में सामूहिक पूजन और कथा श्रवण का भी विधान है।

आधुनिकता को सुरक्षा भाव देती धार्मिकता

देवभूमि नाम उत्तराखंड को यूं ही नहीं दे दिया गया। वास्तविकता तो यह है कि यहां पर पूजे जाने वाले देवताओं और उनके मंदिरों की सूची बनाएं तो वो इतनी लंबी होगी कि किसी न किसी का नाम छूट जाने का अपराध बोध हमेशा लेखक के मन में रहेगा। बात यहां के सुप्रसिद्ध चारों धाम, पंचकेदार, जागेश्वर, बागेश्वर, दूनागिरी, पूर्णागिरि, मां बाराही, मां नयना देवी, मां नंदा-सुनंदा, मां कोट भ्रामरी (शक्ति पीठों) की हो या स्थानीय देवता गोल्ज्यू, गंगानाथ, एक लिंग, नौलिंग इत्यादि की हो या फिर प्रत्येक गांव, प्रत्येक परिवार के अपने अपने छोटे-छोटे देवालयों की हो, आस्था, विश्वास और श्रद्धा की अनगिनत धाराएं यहां की धरती के हर कोस से प्रस्फुटित होती हैं। सामान्य तौर पर यहां के पर्वों, त्योहारों, मेलों और सामूहिक पूजा के अवसरों पर स्त्री-पुरुषों की समान रूप से भागीदारी रहती है।

आत्मा में रची बसी मान्यताएं

कुमाऊं की महिलाओं पर धार्मिक प्रभाव की यदि हम विशेष रूप से चर्चा करें तो यह मुख्य रूप से 21वीं सदी के परिप्रेक्ष्य में ही होगी। आंकड़े बताते हैं कि उत्तराखंड की 70 प्रतिशत महिलाएं साक्षर हैं। कुमाऊं में भी कमोबेश यही स्थिति है। 2019-2021 के मध्य हुए एक सर्वे के अनुसार, कुमाऊं की 31 प्रतिशत विवाहित महिला आबादी कामकाजी है। आज की तारीख में आधुनिक कही जाने वाली इन महिलाओं की जीवनचर्या को अगर देखें तो पाएंगे कि धार्मिक मान्यताएं उनकी आत्मा में रची बसी हैं।

- कुमाऊं की महिलाओं के धार्मिक आचार व्यवहार को समझने के लिए उनके द्वारा मनाए जाने वाले त्योहार, पर्वों, व्रत, अनुष्ठान, रीति रिवाज इत्यादि को समझना होगा। चैत्र माह की फूल देई से प्रारंभ करें तो अब भी छोटी-छोटी बालिकाएं देहली पूजन के लिए जाती हैं। यद्यपि ग्रामीण क्षेत्रों में उनका प्रतिशत शहरी क्षेत्रों की अपेक्षा कम है, तब भी उनके द्वारा भवन के अंदर रहने वाले परिवार के ऐश्वर्य एवं मंगल के लिए की गई कामना धार्मिक आस्था का ही परिचय देती है।
- इसी माह में भिटोली देने की परंपरा भी है जिसे आज की महिलाएं भी मानती हैं। एक तरफ वो बेटियों को भेंट स्वरूप कपड़े, पकवान, मिठाइयां इत्यादि देने के लिए तत्पर रहती हैं तो दूसरी तरफ स्वयं भी प्रतीक्षा करती हैं कि उनके मायके से भाई-भाभी या माता-पिता भिटौली लेकर आएं। इसी माह में होने वाली कन्या पूजन और भिटौली को एक साथ ही जोड़कर देखा जाना चाहिए, जिसमें स्त्री के शक्ति स्वरूप नौ रूपों की पूजा भी होती है और विवाहित स्त्री के मान सम्मान का भी पूरा ध्यान रखा जाता है।

पिछौड़ा धारण करना नहीं भूलतीं महिलाएं

ज्येष्ठ माह में वट सावित्री अमावस्या के दिन विवाहित स्त्रियां अपनी पति की लंबी आयु एवं परिवार में संपन्नता के लिए व्रत रखती हैं। मॉडर्न महिलाएं भी एक दिन के लिए पारंपरिक वेशभूषा में पिछौड़ा धारण कर वटवृक्ष का पूजन कर अपने पति के मंगल की कामना करती हैं। वर्षा ऋतु में तुलसी एकादशी, चातुर्मास्य के व्रत, विरूड़ पंचमी, सातु-आठु (गौरा-महेश्वर पूजा), दूर्वाष्टमी, ऋषि पंचमी (नागपंचमी) का उत्सव मनाती हैं।

लेखिका : बीना जोशी हर्षिता
वरिष्ठ प्रवक्ता, इतिहासकार एवं साहित्यकार, हल्द्वानी।